Jai Maa Saraswati Gyandayini
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed)
Journal home page: www.jmsjournals.in, **ISSN: 2454-8367**
Vol. 09, Issue-III, January 2024

महाकवि कालिदास की रचनाओं में वर्णित प्रकृति–चित्रण
(Nature-depictions described in the works of Mahakavi Kalidas)

Dr. Saroj Kumari[a,*],

[a] *Senior Research Scholar, Sanskrit Department, Himanchal Pradesh University, Simla (H.P.), India.*

KEYWORDS

कालिदास, प्रकृति, ऋतुसंहार, मेघदूत, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, रघुवंश, कुमारसम्भव।

ABSTRACT

कालिदास संस्कृत साहित्य के एक सर्वश्रेष्ठ कवि तथा नाटककार हैं। उन्हें राजा विक्रमादित्य की सभा के नवरत्नों में से एक माना गया है जिनमें से कालिदास मुख्य थे। भारतीय संस्कृति के प्रति गहन निष्ठा रखने वाले कालिदास ने आनंद को ही जीवन दर्शन मानकर इसकी साधन के रूप में काव्य रचना की।उन्होंने इसी आनंद को अपने महाकाव्यों में तथा रूपकों में विस्तार प्रदान किया है। ऋतुसंहार नामक रचना में उन्होंने छः ऋतुओं का वर्णन किया है जिनका प्रभाव प्रेमी जनों पर पड़ा है। छह सर्गों में प्रत्येक सर्ग में एक–एक ऋतु का वर्णन किया गया है। सभी ऋतुओं का सरल एवं स्वाभाविक वर्णन इस खंड काव्य में किया गया है जिनमें क्रमशः ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत, शिशिर व वसंत ऋतुओं को रखा गया है। मेघदूत नामक रचना गीतिकाव्यों में सर्वोत्तम काव्य है। इसमें भी रामगिरी पर्वत तथा अलकापुरी मार्ग का चित्रण अद्भुत है। यहां पर मेघ को कालिदास ने यक्ष का संदेश वाहक बनाया है। कुमारसंभव में उन्होंने प्रथम सर्ग में हिमालय–वर्णन,तीसरे सर्ग में वसंत आगमन का अनुपम प्रकृति–चित्रण प्रस्तुत किया है। रघुवंश में उन्होंने द्वितीय सर्ग में राजा दिलीप तथा रानी सुदक्षिणा के बीच नंदिनी गाय को क्रमशः दिन (दिलीप) रात (सुदक्षिणा) व संध्याकालीन लालिमा (नंदिनी) कहा है। संस्कृत साहित्य में अभिज्ञानशाकुंतलम नाटक, नाटकों में शिरोमणि रत्न है। भारतीय साहित्य ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्व साहित्य में कालिदास का एक विशेष स्थान है। जिस कारण उन्हें महाकवि तथा कविकुलगुरु कहा है। अभिज्ञानशाकुंतलम् नाटक में कालिदास ने प्रकृति– प्रेम सुंदर रूप से अभिव्यक्त किया है। यह नाटक भारतीय संस्कृति के जीवन– मूल्यों का एक अनुपम प्रकाशक है। अतः कालिदास की रचनाओं में उनका प्रकृति के प्रति प्रेम स्पष्ट अभिव्यक्त होता है।

मनुष्य के लिये प्रकृति सहचरी है तथा साक्षात् परमात्मा का रूप है। इस भौतिकवादी युग में मानव प्रकृति को भूलता जा रहा है जबकि प्रकृति से तालमेल रखने से परमानन्द की प्राप्ति होती है क्योंकि जब मनुष्य को बनावटी साधनों से सुख की प्राप्ति नहीं होती तो उसे वास्तविक सुख केवल प्रकृति की गोद में ही प्राप्त हो सकता है। विश्व विख्यात कवि कालिदास अपने काव्यों में प्रकृति–चित्रण के दृश्यों को सजीव तथा साक्षात् रूप से हमारे नेत्रों के समक्ष प्रस्तुत कर देते हैं।

उन्होंने अपनी सभी रचनाओं में प्रकृति चित्रण को तथा प्रकृति में वर्ण (रंग), संयोजन की छटा, रस प्रभाव प्रवणता तथा उद्भावनाओं को कोमलकान्त पदावली में

Corresponding author
***E-mail:** sarojkumarimphil@gmail.com (Dr. Saroj kumari). https://orcid.org/0000-0002-6925-2770
DOI: https://doi.org/10.53724/inspiration/v9n3.06
Received 15th Nov. 2023; Accepted 15th Jan 2024
Available online 30th Jan. 2024
2455-443X /©2024 The Journal. Published by Research Inspiration (Publisher: Welfare Universe). This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

चित्रित किया है। ऋतुसंहार कालिदास का एक विख्यात काव्य है। यह इनकी प्रथम रचना है जिसमें छः सर्गों में ग्रीष्म से आरम्भ करके वसन्त तक की छः ऋतुओं का अद्भुत प्रकृति चित्रण प्रस्तुत किया गया है। कालिदास ने अपनी प्रथम रचना ऋतुसंहार में प्रकृति–चित्रण में अनेकानेक चित्रण प्रस्तुत किये हैं–

ऋतुसंहारम् विपाण्डुरं कीटरजस्तृणान्वितं
भुजंगवद् वक्रगतिप्रसतम्।
ससाध्वसर्भेककुलनिरीक्षतं प्रयाति निम्नाभिमुखं
नवोदकम् ॥[1]

इस श्लोक के अनुसार बतलाया गया है कि जब घरों में बरसात का पानी दीवारों पर आता है और प्रथम बार टेढ़ी–मेढ़ी लकीरें बनाता है तथा वह पानी (बरसात का) पीले सूखे हुये पत्तों को हटाता हुआ ऐसा लगता है मानो भुजंग (साँप) वन में विचरण कर रहा हो।

मेघदूत की रचना में भी हमें प्रकृति के अनुपम वर्णन की छटा बहुत प्रभावित करती है । जैसे यक्ष पहाड़ी ढलान पर मेघ को देखकर कहता है कि–

धूमो ज्योतिः सलिलमरुतां संनिपातः क्व मेघः।[2]

अर्थात् धुआँ, अग्नि, जल तथा वायु के समन्वित रूप में मेघ का ऐसा आकार कवि चित्रित करते हैं कि आकाश में मेघ स्वयं ही पर्वत की चोटी जैसा सजीव हो उठता है। कवि कालिदास ने प्रकृति के विभिन्न रूपों का इतना हृदयग्राही वर्णन किया है कि पाठक स्वयं ही आत्मोनन्दित हो जाता है।

कुमारसम्भव के प्रथम सर्ग के अनुसार प्रथम श्लोक में कालिदास ने हिमालय का चित्रण प्रस्तुत किया है जिसमें मानो वह प्रकृति को मापने का एक अति विशाल शुभ्रदण्ड हो।

अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम
नागाधिराजः ।
पूर्वापरौ तोयनिधी वगाह्य स्थितः पृथिग्या इव
मानदण्डः ॥[3]

रघुवंश के द्वितीय सर्ग के अनुसार राजा दिलीप तथा रानी सुदक्षिणा के बीच नन्दिनी गाय को इस प्रकार चित्रित किया है मानो दिन (दिलीप) और रात (सुदक्षिणा) के मध्य संध्याकालीन लालिमा (नन्दिनी गाय) हो।

पुरस्कृता वर्त्मनि पार्थिवेन प्रत्युद्गता पार्थिव धर्मपत्न्या।
तदन्तरे सा विरराजधेनुर्दिनक्षपामध्यगतेव सन्ध्या ॥[4]

स्पष्ट कहा जा सकता है कि ऐसा चित्रण केवल कालिदास ही उपस्थित कर सकते हैं क्योंकि अन्य के लिये यह सर्वथा दुर्लभ एवं अकल्पनीय विषय है ।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के अनुसार तपोवन में प्रकृति की गोद में पली शकुन्तला जब आश्रम से विदा होती है तो विदाई देने के लिये महर्षि कण्व तपोवन के वृक्षों को सम्बोधित करते हुये कहते हैं कि–

पातुं प्रथमं व्यवस्यति जलं युस्मास्वपीतेषु या
नादत्ते प्रियमण्डनापि भवतां स्नेहेन या पल्लवम् ।
आद्ये वः कुसुमप्रसूतिसमये यस्या भवत्युत्सवः
सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैनुज्ञायताम् ॥[5]

अर्थात् शकुन्तला पतिगृह को जा रही है, आप सब (वृक्ष) उसे जाने की आज्ञा दो। यह वही शकुन्तला है जो आपको जल दिये बिना कभी स्वयं भी जल नहीं ग्रहण करती थी। अलंकार प्रिय होने पर भी स्नेह के कारण जो एक पत्ता भी नहीं तोड़ती थी तथा जो प्रथम पुष्प खिलने पर आपके लिये उत्सव मनाती थी।

इस श्लोक में कवि ने करुण भाव के सुन्दर वर्णन के साथ–साथ अन्तःप्रकृति और बाह्या–प्रकृति के ऐकात्म्य का अनुभव कराया है। इस श्लोक को समीक्षकों ने अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चार श्रेष्ठ श्लोकों में से एक माना है। इसमें कवि ने प्रकृति तथा मानव का प्रेममय बन्धन दर्शाया है।

मनुष्य अपने प्रियजनों से दूर अधिक समय के लिये नहीं रह सकते उसी प्रकार पशु–पक्षी भी अपने प्रियजनों से दूर नहीं रह पाते क्योंकि चकवा–चकवी पक्षियों का जोड़ा क्षण भर के लिये भी एक–दूसरे से अलग नहीं रह सकता उसी प्रकार यह शकुन्तला भी अपने पति दुष्यन्त से दूर नहीं रहना चाहती इस प्रकार कवि ने मनुष्य तथा पशु–पक्षियों के भावों को समान बताया है।

नलिनीपतन्तरिवमति, सदृचरमपश्यन्त्यातुरा ।
चकवा वाक्या रटति, दुष्कस्महं करामीति ॥[6]

महाकवि कालिदास रचित मेघदूत तो प्रकृति–चित्रण के लिये एक सर्वोत्तम ग्रन्थ है। प्रकृति में मानवीय चेतना एवं क्रिया कलापों को अत्यन्त कुशलता से एक–दूसरे पर समारोपित किया है। जैसे–

काले काले भवति भवतो यस्य संयोगमेत्य ।
स्नेहत्यक्ति स्चिरविरहणं मुत्वतो वाष्पुमुष्णम् ॥[7]

इस श्लोक के द्वारा बतलाया गया है एक व्यक्ति अपने प्रिय मित्र के कष्ट के समय अपने आँसु नहीं रोक पाता उसी प्रकार यह मेघ भी अपने मित्र पर्वतराज से बहुत समय के अन्तराल के बाद मिलने पर गर्म अश्रु प्रवाहित करता हुआ प्रतीत होता है। इसमें स्पष्टतः प्रकृति एवं मनुष्य का गहरा सम्बन्ध प्रतीत होता है।

शकुन्तला के हृदय में प्रकृति तथा आश्रम से अटूट प्रेम था। शकुन्तला तो विशुद्ध प्रकृति के परिवेश में ही विकसित हुयी है। शकुन्तला के सौन्दर्य में ही प्रकृति के विविध उपादान उपमान रूप में जटित हैं। जैसे–

अधरः किसलय रागः कोमल विटप अनुकारिणी बाहू।
कुशमपि लोमनीय यौवनमंगेषु सन्नद्धम् ॥[8]

अतः इस श्लोक में स्पष्ट होता है कि मानव जीवन में प्रकृति का अधिक योगदान है।

मेघदूत में कवि कालिदास ने निर्विन्ध्या नदी जो उज्जयिनी में है उसको मेघ के लिये कहा है कि मार्ग में आने वाली निर्विन्ध्या नदी विभिन्न हाव–भाव से तुम्हें आकृष्ट करेगी जो तरंगों के हलचल के कारण शब्दायमान पक्षियों की पंक्ति रूपी करधनी को धारण करने वाली, प्रवाह के कारण सुन्दरता से बहने वाली और भंवर रूपी नाभि को दिखाने वाली उस नदी रूपी नायिका से मिलकर तुम रस अवश्य प्राप्त करना क्योंकि कामिनियों का हाव–भाव प्रदर्शन ही रतिप्रार्थना वाचक होता है।

वीचिक्षोभस्तनितविहगश्रेणि काञ्चीगुणायाः
संसर्पत्याः स्खलिव सुभगं दशितावर्तनाभेः ।
निर्विन्धायाः पथि भव रसाभ्यंतरः संनिपत्य
स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियषु ॥[9]

अर्थात् इस श्लोक में कालिदास ने प्रकृति को प्रायः प्रेमी अथवा प्रेमिका के रूप में दिखलाया है। इससे स्पष्ट होता है कि वे पात्रों को उपस्थित करने के लिये प्रकृति के सुन्दर तत्त्वों से सादृश्य स्थापित करते हैं।

रघुवंश महाकाव्य में कवि ने राजा रघु के मुख के सौन्दर्य को वर्णित करने के लिये प्रकृति के प्रसिद्ध उपमान चन्द्रमा का आश्रय लिया है–

प्रसादसुमुखे तस्मिनश्चन्द्रे च विशदप्रभे ।
तदा चक्षुष्मतां प्रीतिशसीत्समरसा द्वयोः ॥[10]

इस श्लोक में कवि ने राजा रघु के मुख से की है जो प्रकृति व मनुष्य के समान होने का प्रतीक है । कुमारसम्भव में कालिदास ने पार्वती को चलती–फिरती एवं फूलों से लदी हुई लता (बेल) के समान कहा है–

आवर्जिता किञ्चिदिव स्तानाभ्यां वासो वसना तरुणार्करागम् ।
पर्याप्तपुष्पस्तबकावनम्रा संचारिणी पल्लविनी लतेव ॥11

जब पार्वती अपने पूर्व जन्म की विद्याओं को याद नहीं कर पाती है परन्तु उनको स्वयं ही उन विद्याओं का स्मरण हो जाता है तो कवि इसकी उपमा शरद्काल में हंसों के गंगा में स्वयं ही आ जाने से करते तथा जैसे– जड़ी–बूटियों में रात को चमक आ जाती है उसी प्रकार तीव्र बुद्धि वाली पार्वती को उसके पूर्वजन्म की विद्यायें स्वयं ही आ जाती हैं।

तां हंसमालाः शरदीव गंगा महौषधिं नक्तमिवात्मभासः।
स्थिरोपवेशामुपदेशकाले प्रपेदिरे प्राक्तनजन्मविद्या ॥[12]

कवि ने सप्तर्षियों के हिमालय आगमन पर सुन्दर उपमा दी है। हिमालय सप्तर्षियों के लिये कहता है कि आपका अचानक दर्शन प्राप्त होना ऐसा लग रहा है मानो कि बिना मेघ के आये ही वृष्टि हो गयी हो या बिना फूल निकले ही फल लग गये हों।

अपमोघोदयं वर्षमदृष्टकुसुमं फलम्।
अतर्कितोपपन्नं वो दर्शनं प्रतिभाति में ॥[13]

कवि चन्द्रमा की किरणों को जौ के ताजा अंकुर का उपमान देते हैं जो मानों स्वर्ग को धरती से मिलाने के

समान है–

शक्यमोषधिपतेर्नवोदयाः कर्णपूररचनाकृते तव।

अप्रगल्भयवसूचिकोमलाश्छेत्तुमग्रनखसम्पुटैः करा ॥14

महाकवि कालिदास ने प्रायः प्रकृति के कोमल रूप को ही चित्रित किया है परन्तु वर्षा चित्रण में उन्होंने प्रकृति के भयावह रूप को भी दर्शाया है–

घोरान्धकार निकर प्रतिमो युगांतकालानल प्रबल धूमनिभो नभोसन्ते।
गर्जारवैर्विघटयन्नीधराणां शृङ्गाणि मेघनिवहो घनमुज्जगाम् ॥[15]

इस श्लोक के अनुसार कार्तिकेय के वारुणास्त्र चलाते ही मानो आकाश में भयंकर अंधेरा, प्रलय की आग से उठे हुये धुएँ के समान काली–काली घटायें, आकाश में छायी जिसकी गर्जना से पहाड़ की चोटियों तक दरारें आ गयीं।

चित्रकूट पर्वत के चारों तरफ मन्दाकिनी (नदी) पृथ्वी (नायिका) के गले में ऐसी प्रतीत हो रही है जैसे–किसी नायिका ने गले में मुक्ता माला पहन रखी हो।

मन्दाकिनी भांति नागोपकण्ठे मुक्तावली कण्ठगतेव भूमेः।[16]

अर्थात् इस श्लोक में मन्दाकिनी को पृथ्वी रूपी नायिका के गले की माला बतलाया गया है।

रघुवंश के छठे सर्ग में इन्दुमती–स्वयंवर में कालिदास ने इन्दुमती को दीपशिखा की उपमा दी है।

संचारिणी दीपशिखेव रात्रौ यं यं व्यतीयाय पतिंवरा सा।[17]

महाकवि ने रघु के प्रताप को सूर्य के तेज से भी अधिक कहा है।

दिशि मन्दायते तेजो दक्षिणस्यां रवेरपि ।
तस्यमेव रघोः पाण्ड्याः प्रतापं न विषेहिरे ॥[18]

हिमालय के गुहारूपी मुख से निकली वायु कीचक वन में प्रवाहित होती है तो ऐसा प्रतीत होता है मानो हिमालय वेणुवादन कर रहा हो।

यं पूरयन्कीचकरन्ध्रभागान्दरीमुखोत्थेन समीरणेन।[19]

इस प्रकार कालिदास अपने प्रमुख पात्रों का प्रकृति से पूर्ण अभेद स्थापित करके मानव व प्रकृति की एकात्मकता का प्रतिपादन करते हैं।

निष्कर्ष

कहा जा सकता है कि महाकवि कालिदास के साहित्य का सौन्दर्य तथा उनकी सौन्दर्य दृष्टि कल्पना अति अनुपम, अतुलनीय है। वे प्रकृति के उपासक तथा प्रेमी हैं। उनका प्रकृति–चित्रण आत्मानुभूति तथा सूक्ष्म निरीक्षण पर आधारित है। वे प्रकृति को चेतन एवं भावनायुक्त पाते हैं। पशु–पक्षी तो चेतनावत व्यवहार करते ही हैं परन्तु सम्पूर्ण चराचर प्रकृति भी मानववत व्यवहार करती दिखाई देती है अर्थात् कालिदास की कल्पनाशक्ति अद्भुत है। उन्होंने अपने सभी काव्यों एवं नाटकों में प्रकृति के प्रति अपनी हार्दिक प्रीति अभिव्यक्त की है।

सन्दर्भ सूचीः

1. ऋतुसंहार, 2.13
2. पूर्वमेघदूत, 5
3. कुमारसम्भव, 1.1
4. रघुवंश, 2.20
5. अभिज्ञानशाकुन्तलम, 4.9
6. वही, 4.102
7. पूर्वमेघदूत, 12
8. अभिज्ञानशाकुन्तलम 1.21
9. पूर्वमेघदूत, 29
10. रघुवंश, 4.18
11. कुमारसम्भव, 3.54
12. वही, 1.30
13. वही, 6.54
14. वही, 8.62
15. वही, 17.41
16. रघुवंश, 13.46
17. वही, 6.67
18. वही, 4.49
19. कुमारसम्भव, 1.8

अन्य कार्य का उद्धरण–

1. संस्कृत साहित्य का इतिहास, लेखकः डॉ. उमाशंकर शर्मा ऋषि, प्रकाशकः चौखम्बा भारती अकादमी, वाराणसी।
2. अभिज्ञानशाकुन्तलम् लेखकः डॉ. कपिल देव द्विवेदी, प्रकाशकः रामनारायण लाल विजय कुमार कटरा रोड इलहाबाद।
3. मेघदूतम् लेखकः डॉ. विजय कुमार शर्मा, प्रकाशकः साहित्य भण्डार, सुभाष भण्डार मेरठ।
4. कुमारसम्भवम् लेखकः आचार्य उमेश शास्त्री, प्रकाशनः चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी।
5. प्राचीन भारत में पर्यावरण–चिन्तन (विशेष सन्दर्भः महाकवि कालिदास) लेखिकाः डॉ. वन्दना रस्तोगी, प्रकाशकः पब्लिकेशन स्कीम, जयपुर।

****